मथुरा
परिग्रहण सं० ....
वर्गांक ....

भाव चेतना को प्रभावित करें, ऐसी विधि की खोज हो

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

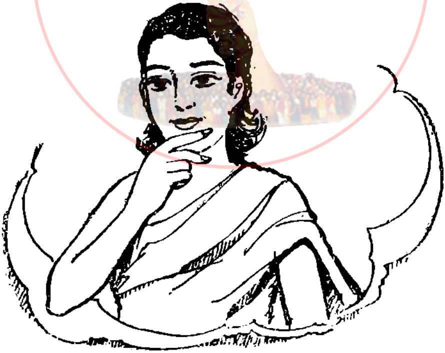

- श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

भाव चेतना को प्रभावित करे ऐसी विधा की खोज हो

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को तर्क, प्रमाण, विचार, परामर्श आदि आदि देकर प्रभावित कर सकता है इसकी जानकारी सभी को है। अध्यापक अपने छात्रों के मस्तिष्क को विकसित करते हैं। पहलवान अपने शागिर्दों को कुश्ती, कसरत सिखाकर बलवान बनाते हैं। वक्ता, लेखक विचारों से हलचल उत्पन्न करते और लोगों के सोचने के तरीके में परिवर्तन करते हैं। नर-नारी के बीच शारीरिक आकर्षण भी काम करता है और प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने रौब दौब, आतङ्क का भी उपयोग करते हैं।

उपरोक्त प्रभाव प्रक्रिया का स्तर उथला ही रहता है। अध्यापक गणित इतिहास, भाषा, भूगोल, आदि की जानकारी करा देने पर अपने कर्त्तव्य से छुट्टी पा लेते हैं। वे चिन्तन की शैली, आकांक्षा और दिशा नही बदल सकते अखाड़े के पहलवान शागिर्दों की माँस-पेशियां मजबूत कर सकते हैं उनमें मनोबल उत्पन्न नही कर सकते।

इसी प्रकार लेखक, वक्ता, नेता प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति अपनी तेजस्विता के सम्मोहन से तत्काल तो कुछ भी सोचने करने को आवेश उत्पन्न कर सकते हैं पर वह क्षणिक होता है और उथला रहता है। वह नशा उतरते ही लोग अपने पुराने ढर्रे पर आजाते हैं और वह कृत्रिम उत्साह अपनी क्षणिक चमक दिखा कर तिरोहित होजाता है। कारण स्पष्ट है जो शिक्षण दिया गया था वह अन्तःकरण की गहराई तक प्रवेश न कर सका केवल उथल बौद्धिक स्तर तक टकरा कर बिखर गया। उस टकराहट की प्रतिक्रिया जितनी देर रह सकती थी उतनी देर रही और इसके बाद व्यक्ति की वही संस्कार गत स्थिति आगई।

मनुष्य का समग्र व्यक्तित्व विकसित एवं परिवर्तित करने से ही उसकी गरिमा और महत्ता बढ़ सकती है। महामानव ही इस विश्व की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सच्ची सम्पत्ति होते हैं। कोई देश और समाज उन्हीं के कारण गौरव शाली बनते हैं और उन्हीं के अभाव में पतन के गर्त में गिरते चले जाते हैं। राष्ट्रीय सम्पदा का मूल्यांकन, धन के आधार पर नहीं मनस्वी, तेजस्वी और आत्म बल सम्पन्न प्रतिभा के आधार पर ही किया जाना चाहिए। वे यदि उद्भूत नहीं तो विपुल सम्पदा सम्पन्न होते हुए भी कोई समाज दरिद्र ही रहेगा। उसकी वह आर्थिक उन्नति भी ठोस प्रगति की दिशा में कुछ अधिक सहयता न कर सकेगी।

उच्चस्तरीय व्यक्तित्वों का निर्माण कैसे हो? इसके लिए उसी स्तर के सांचे चाहिए। टकसाल के सांचे जैसे होते हैं वैसे ही सिक्के ढलते चले जाते हैं। बुद्ध के अनुगामी ढाई लाख व्यक्तियों ने ससार भर में सत्य अहिंसा का सदेश पहुँचाया था। गान्धी के अनुचर स्वतंत्रता संग्राम में एक से एक बढ़ चढ़ अनुदान लेकर आगे आये। यह प्रेरणाइं बौद्धिक आधार पर नहीं—भावना स्तर पर दी जाती हैं। और इनको देने के लिए वैसा ही आत्म शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व चाहिये। आज आवश्यकता ऐसी ही हस्तियों की है जो अपने आत्मबल से जन साधारण के भावस्तर को विकसित और परिष्कृत कर सकें। विज्ञान इस सभावना को स्वीकार करता है कि अदृश्य शक्ति प्रवाह के द्वारा भी मानवीय चेतनाको अभीष्ट दिशा में मोड़ा या ढाला जा सकता है।

मानव मस्तिष्क की अन्तस्त्वचिका के भीतर एक विशेष प्रकार की तन्त्रिकाऐं पाई जाती हैं उनका समूह भावात्मक मस्तिष्क कहलाता है। भय, क्रोध, शोक, चिन्ता, अवसाद, हर्ष संतोष, प्रेम, त्याग, सयम और कामोद्वेग जैसी प्रवृत्तियाँ इसी भाग से सबधित हैं। इनका स्वरूप बहुत कुछ वंश परम्परा से उत्तराधिकार में मिला था, कुछ वातावरण एवं संगति में और कुछ व्यक्तिगत चिन्तन की दिशा के आधार पर विकसित होता है। अविकसित और विकसित प्राणियों का यों मानसिक अन्तर कुछ तो बुद्धि के आधार पर भी होता है पर मुख्य अन्तर यह भावात्मक ही है। भावनाओं के आवेश में ही मस्तिष्क उत्तेजित और मस्तिष्क सक्रिय होता है। इन दोनों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिखरी हुई दिशाओं को एक केन्द्र पर एकत्रित करने और क्रियाशील बनाने का श्रेय इस भावात्मक मस्तिष्क केन्द्र को ही है।

येल विश्वविद्यालय के न्यूरोलोजिस्ट डा० जोसे डेलगेडो ने ऐसे विद्युत रेडियो उपकरणों का आविष्कार किया है जिनके आधार पर बिना शल्य चिकित्सा के ही रेडियो किरणों द्वारा मस्तिष्क के किसी भाग से सम्पर्क बनाना और उसे प्रभावित कर सकना संभव हो सके। भावनात्मक मस्तिष्क की तंत्रिकाओं और कोशिकाओं को शरीर के आर-पार जा सकने वाली किरणों के द्वारा वहां के असंतुलन को मिलाया जा सकेगा। विशेष प्रकार का भावावेश उत्पन्न किया जासकेगा। यह किरणें 'क्ष' किरणों से मिलती जुलती हैं जिन्हें शरीर के आरपार जाने में मस्तिष्क की कठोर खोपड़ी में भी कोई बडी बाधा नहीं पहुँचती।

अब तक भावनाओं का समाधान भावनाओं से ही किया जाता रहा है। क्रोध को विनय से, घृणा को प्रेम से, असतोष को उपलब्धियों से शमन किया जाता रहा है। इसके लिये सामने वाले व्यक्ति को अपनी वाणी, व्यवहार और क्रिया द्वारा असतुलित व्यक्ति को वैसा विश्वासदिला कर उस उद्वेग का समाधान करना पड़ता था जिसके अभाव में उसे असंतुलित होना पड़ा। इतनी लम्बी प्रक्रिया के बाद तब कहीं उत्तेजित व्यक्ति सामान्य स्थिति में आता था। उसके समाधान के लिए व्यक्ति विशेष को माध्यम बना कर अथवा वातावरण को बदल कर मनोविकार ग्रस्त मनुष्य की शान्ति सभव की जाती थी। उचित ही नहीं अनुचित समाधान भी प्रस्तुत करने पड़ते थे। पर अब उपरोक्त वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण यह कठिन प्रक्रिया सरल होगई। रेडियो विद्युत धाराएँ आवेश ग्रस्त मस्तिष्कीय खण्ड का शमन कर दिया करेंगी और मनुष्य चिकित्सक के इशारे पर अपने भाव संस्थान में आवश्यक परिवर्तन कर लिया करेगा। इस सफलता के कारण न केवल भावनात्मक रुग्ण ग्रन्थियों को खोला जा सकेगा वरन् उनमें उपयोगी ऐसे भाव बीज भी जमाये जा सकेंगे जो उसे किसी दिशा विशेष में चलने के लिये आवश्यक रुचि एव स्फूर्ति पैदा कर सकें।

मानवीय मस्तिष्क पर इलेक्ट्रोनिक नियमन की इस प्रक्रिया पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य बहुत तेजी से चल रहा है और प्रगतिभी काफी भी हुई है। दो दशक पूर्व स्विटजर लैण्ड के विज्ञानी डा० डब्ल्यू० आर० हेस ने इस दिशा में प्रयास आरम्भ किया उन्होंने जीवित प्राणी के मस्तिष्क में एक सुई घुमेड़ कर उसके माध्यम से विविध स्तरों की विद्युत तरंगे पहुँचाई थीं और उनके प्रभाव का अध्ययन किया था। उन्होंने पाया कि चेतन और अचेतन मस्तिष्क के भागों में विभिन्न स्तर के जो चेतन केन्द्र बने हुए हैं उनसे संबन्ध स्थापित किया जा सकता है और उन केन्द्रों को उत्तेजित करके उसी स्तर की विचारणा से प्राणी को ओत प्रोत किया जा सकता है।

इसके बाद अमरीकी मस्तिष्क विद्या विशारद डा० जेम्स ओल्डस् ने इस कार्य को और आगे बढ़ाया। उन्होंने मानवी मस्तिष्क को हाथ में लिया जब कि पूर्ववत् स्विस विज्ञानी वैसे प्रयोग अन्य प्राणियों पर करते रहे। भूख, भय, इच्छा, कामुकता, क्रोध, पीड़ा, निराशा, उत्साह जैसे मस्तिष्क क्षेत्र तो पहले भी मालूम थे पर उनके केन्द्रीय कण उन्होंने ढूँढे और इस खोज के बाद उन्होंने वह पद्धति खोजी जिसके अनुसार उस केन्द्र तक वाह्य प्रभाव को पहुँचाया जा सकना संभव होसके। इसमें सबसे बड़ी बाधा खोपड़ी को चारों ओर से जकड़ी हुई कपाल अस्थियों की थी। यह अस्थियां शिर की केवल सर्दी गर्मी चोट आघात आदि से ही रक्षा नहीं करती वरन् बाहरी विद्युत प्रभावों को भी भीतर जाने से रोकती हैं। विचारों की बिजली अति सूक्ष्म होने से भीतर प्रवेश कर सकती है। एक संकल्प शील व्यक्ति के विचार दूसरे व्यक्ति पर आरोपित करने का सफल प्रयोग तो जर्मनी के डा० शेक्सर पहले ही कर चुके थे। मैस्मरेजम हिप्नोटिज्म आविष्कारों ने उनमें इसी तथ्य को प्रत्यक्ष किया था। पर यह तो प्रश्न विचार तरङ्गों का नहीं—विद्युत तरङ्गों के प्रवेश का था, इसमें कपाल अस्थियां प्रधान रूप से अवरोध उत्पन्न कर रही थी। इस लिए उन्होंने चोर रास्ते से प्रवेश किया रेडियो प्रभावित रसायनों को रक्त में मिला कर और उस प्रभावित रक्त में विद्युत तरङ्गें पहुँचाकर नया रास्ता खोज लिया गया और अमुक केन्द्र को उत्तेजित करने के लिए अमुक स्तर की विद्युत का प्रयोग करने की पद्धति का निर्धारण कर लिया गया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह प्रयत्न और भी अधिक तेज कर दिये गये हैं और वह सरलता खोजी जारही है जिसमें जिसे प्रभावित करना हो उसके सहयोग की आवश्यकता न रहे। अभी तो यह कार्य तभी हो सकता है जब व्यक्ति पर लोह-पट्टी बंधवाने और औषधालय सेवन के लिए सहायता हो। बांध कर बलात्कार पूर्वक तो यह किया नहीं जा सकता। यदि व्यक्ति अपने ऊपर इस प्रकार का प्रभाव डलवाने के लिए सहमत न हो तब तो सारी योजना ही निरस्त हो जायगी। अस्तु शोध के चरण इस दिशा में चल रहे हैं कि मनुष्य को पता भी न चले और परोक्ष रूप से उसे बौद्धिक पराधीनता के पाश से मजबूती से जकड़ा जासके।

प्रकृति की शक्तियों को वशवर्ती करने में बहुत बड़ी मात्रा में सफलता प्राप्त कर लेने के बाद अब चेतना की स्वतन्त्रता को विज्ञान की मुट्ठी में कैद करने के लिये अन्वेषण गति विधियाँ तीव्र कर दी गई हैं और विज्ञान क्षेत्र में समुन्नत देश गुप चुप इस दौड़ में परस्पर बाजी मारने के लिये खुले हुये हैं। अन्तरिक्ष पर नियन्त्रण करने से भी बढ़ कर यह आविष्कार होगा।

इस दिशा में संतोष जनक सफलता मिलती है तो फिर युद्ध का सब से बड़ा माध्यम यही होगा एक अणु बम, हाइड्रोजनबम जैसे अस्त्र को बेकार समझ कर त्याग दिया जायगा क्योंकि उससे शत्रु देश के विनाश के साथ-साथ विश्वव्यापी वातावरण में विकरण उत्पन्न होने से मित्र देशों को भी खतरा उपस्थित होता है। फिर उसमें कई तरह के खतरे और झंझट भी हैं। खर्चीली तो वह प्रक्रिया है ही उसकी सुरक्षा के लिए भी कम चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

प्रगति जिस चरणमें पहुंची है उसे देखते हुए मिशिगन विश्वविद्यालय अमेरिका के इस संदर्भ में सलग्न विज्ञानी डा० ओटो शिमल ने घोषणा की है कि अब हमारे हाथ में मानव मस्तिष्क को नियन्त्रित करने की शक्ति आ गई है, पर आशा की जानी चाहिये कि उसका प्रयोग केवल अच्छाई के लिए ही होगा किन्तु साथ ही इस खतरे को भी ध्यान में रखना होगा कि इस नव उपार्जित शक्ति का प्रयोग निजी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति एवं राष्ट्रीय विस्तार वाद के लिये भी किया जा सकता है। यदि ऐसा किया गया तो यह आवि-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ष्कार संसार का सबसे अधिक विघातक अस्त्र सिद्ध होगा।

कुछ दिन अमरीका प्रति रक्षा विभाग के एक गधे पर यह प्रयोग किया गया था और उसे उपकरणों से प्रभावित करके अकेला छोड़ा गया था। उसे जिधर चलने और जो करने के लिए निर्देश किया उसने वही सब कर दिखाया।

इस अन्वेषण के आधार पर कई उपयोगी चमत्कार अमेरिका के मेयो क्लिनिक ने-कनाडा के मोन्ट्रियल न्यूरो लोजिकल इन्स्टीट्यूट ने तथा नार्वे के गुस्टाड मेन्टल हास्पिटल ने दिखाये हैं। रोगी को खुशी-खुशी बिना डरे आपरेशन करा लेने के लिए इस आधार पर तैयार करने में आश्चर्यजनक सफलता पाई गई है। एक प्रयोग में तो एक १८ वर्ष से अन्धी चली आई महिला को उसका मस्तिष्कीय दृष्टि संस्थान उत्तेजित करके देख सकने की शक्ति ही प्रदान करदी। यह इस अन्वेषण का उपयोगी पक्ष है। निस्सदेह इन आविष्कारों का उपयोग मानवी सुविधाओं की वृद्धि भी कर सकता है पर खतरा तो उस दिशा से है जिस पर कि आज के विश्व राजनेता धृष्टता पूर्वक चलते हुए एक दूसरे से बाजी मारने में तुले हुये हैं और तथाकथित शत्रु पक्ष को सर्वथा अपग बनाने की बात सोच रहे हैं।

अवांछनीय दृष्टि-कोण लेकर किया हुआ इस आविष्कार का उपयोग किसी भी अधिनायक वादी के हाथ में चक्रवर्ती विजय सौंप सकता है। इस क्षेत्र में प्रगति सम्पन्न देश अपने विरोधी या असहयोगियों की जनता तथा सैन्य शक्ति में निराशा भीरुता, एव भयाक्रांत मनः स्थिति व्यापक रूप से उत्पन्न कर सकता है और उस व्यामोह में फंसे हुये विशाल जन समाज को मुट्ठी भर लोग अपने काबू में रखने और इशारे पर चलने के लिये विवश कर सकते है। गुलामी के बंधनों में जकड़ने के अब तक के प्रयासों में यह सब से घृणित प्रयास होगा। जब आदमी सोचने की निजी क्षमता ही खो बैठा तो फिर उसका 'अपना पन' तो कुछ रहा ही नहीं, तब उसे जीवित होते हुए भी मृतकों की तरह कहीं भी खींचा घसीटा जाता रहेगा। ऐसे शक्ति सम्पन्न लोगों के चंगुल से तो मुक्त होने की भी फिर कोई आशा न रहेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भौतिक विज्ञान मनुष्य के मस्तिष्क तक ही पहुँच सकता है। क्योंकि मस्तिष्क भी शरीर का ही एक अङ्ग होने से उसे भी भौतिक क्षेत्र में सम्मिलित रखा गया है। मन को छटी या ग्यारवीं इन्द्रिय ही माना गया है। वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा मस्तिष्कों को प्रभावित करने की विधि लगभग खोज निकाली गई है और वह निकट भविष्य में सामने आ भी रही है। इसका भला बुरा प्रभाव जल्द ही देखने के लिये मिल जायगा।

पर भाव क्षेत्र फिर भी सूना ही पड़ा रहेगा। वह भौतिक विज्ञान की परिधि से बाहर है क्यों कि अन्तरात्मा विशुद्ध चेतना का अंश है उसे प्रभावित परिणत और परिष्कृत करने में केवल आत्मसत्ताऐं ही समर्थ हो सकती हैं।

आज आत्मसत्ता की दुर्बलता के कारण भौतिकवादी असुर सत्ता संसार की समस्त सम्पदाओं पर हावी होती जारही है। मस्तिष्क की स्वतन्त्र चिन्तन शैली पर भी उसका दांत है और आश्चर्य नहीं कि वह भी उसकी पकड़ में आजाय। ऐसी विषम घड़ियोंमें इस बात की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है कि आत्म सत्ता का पक्ष इतना प्रबल हो कि उसके द्वारा संसार की भाव चेतना को उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर किया जासके। ऐसा हो सका तो भौतिक विज्ञान और उसकी समस्त उपलब्धियों को विश्व कल्याण में नियोजित किया जा सकेगा। यदि ऐसा न हो सका तो भौतिक विज्ञान के बढ़ते हुये चरण मनुष्य को एक मशीन मात्र बना कर छोड़ेंगे और कुछ सत्ता धारियों की कठपुतली बन कर समस्त मनुष्य समाज को सबसे बुरी पराधीनता—मस्तिष्कीय गुलामी के निविड़ बंधनों में बाँधकर दयनीय स्थिति में जीना पड़ेगा एसे विषम समय में आत्म विज्ञान पक्ष को अधिक समर्थ और अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है।

—★—

क० ९९ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा, मूल्य ४० पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org